M10/1/A1HIN/HP1/HIN/TZ0/XX

22100129

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI A1 – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Thursday 13 May 2010 (afternoon)
Jeudi 13 mai 2010 (après-midi)
Jueves 13 de mayo de 2010 (tarde)

2 hours / 2 heures / 2 horas

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N’ouvrez pas cette épreuve avant d’y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento.

© International Baccalaureate Organization 2010

https://xtremepape.rs/

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं,(१)तथा(२)।इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

१.

प्रदूषण

शहर अपने बड़े होने के अनुपात में प्रदूषित है, प्रदूषण के संबंध में रोज नए नियम बनते हैं फिर भी प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है।गहरी नि:श्वास के साथ उन्होंने खिड़की पुन: बंद कर दी।एअर कंडिश्नर न हो तो गर्म हवाएँ शरीर को झुलसा ही दे।पिछले बीस दिनों से वे एअर कंडिश्नर की धीमी घरघराहट के बीच रह रहे हैं, वह उसके नियमित स्वर के अभ्यस्त हो चुके हैं, किंतु उस स्वर की समानता नीम की पत्तियों की सरसराहट से वह चाह कर भी वह नहीं कर पाते, जिसके नीचे बैठकर वह भज्जू से घंटों सुख-दुख की बातें करते रहते थे।कई बार इच्छा होती कि भज्जू होता तो देखता उनका बेटा 'रामखिलावना' कितना बड़ा आदमी है।पहले रामखिलावन एक छोटे नगर में छोटा अधिकारी था।जिस दिन उन्हें रामखिलावन का पत्र मिला था कि अब वह अधिकारी बन गया है उन्हें महसूस हुआ था कि उनकी तपस्या सफल हो गई। उसी दिन वह शहर गये थे, साथ में दो किलो घी ले गये थे।फड़फड़ाहट से उनकी तंद्रा भंग हो गई थी, कबूतर कोने में बैठा पंख फड़फड़ा रहा था।अतुल परसों ही यह सफेद कबूतर खरीद लाया था, उसके पंख कटे हुए थे, जिसे वह कमरे में छोड़ गया था।गांव में उनके आंगन में गौरैया के झुंड के झुंड के चहचहाया करते, कौवे सुबह होते ही अमरूद के पेड़ पर बैठ कांव-कांव करने लगते।रामखिलावन छोटा था तो कौवों को खूब रोटी खिलाता था। नन्हा रामखिलावन घुटनों के बल चल कर किसी कुत्ते का कान पकड़ लेता और कुत्ता भी वहीं पसर जाता।उन्होंने देखा है कि शहरों में बच्चों प्लास्टिक के जानवरों से खेलते हैं और जिस घर में कुत्ता होता है, वहाँ बच्चे की देखभाल आया करती है।श्यामलाल का जीवन भले ही सुख-सुविधाओं के अभाव में बीता, किन्तु गांव के लोग जो सम्मान देते थे वहीं उन्हें स्वर्गिक आनंद देता था।शिक्षा का क्षेत्र उन्होंने इसलिए चुना था कि विद्यादान का कोई प्रतिदान नहीं था और न ही आज की तरह उन्होंने शिक्षा को व्यवसाय समझा था।रामखिलावन पढ़ रहा था। बी.ए.करने बाद उन्होंने उसका विवाह पढ़ी-लिखी लड़की से कर दिया था।रामखिलावन का भाग्य ही था कि उनका पढ़ाया लड़का विभाग में उच्च्य अधिकारी था।उसने रामखिलावन को नियुक्ति-पत्र दे दिया था।उसके बाद के सफर में रामखिलावन को किसी मदद नहीं पड़ी, वह जोड़-तोड़ कर आगे बढ़ता ही गया।बाबूजी, चाय लाऊँ ? महेसू ने उनकी तंद्रा भंग कर दी। पहले जब रामखिलावन छोटा अधिकारी था तो बहू उनका ध्यान रखती थी, किंतु अब वह देखते हैं बहू-बेटे को उनसे बात करने का समय नहीं है।बहू को देखकर लगता ही नहीं कि यह वही गॉव की सीधी-सादी बाला है।पति के स्तर के अनुरूप वह भी आधुनिका में परिवर्तित हो चुकी है।उनकी पोती सुशीला तो पूर्णरूप से माडर्न हो चुकी है।मक्खन-टोस्ट के साथ उन्होंने चाय पी और रामायण लेकर बहुत ही धीमे स्वर में पढ़ने लगे।तेज स्वर में पढ़ने से दूसरों को असुविधा होगी।पहले वह महेसू से बातें कर लिया करते थे, लेकिन जाता।एक दिन उन्होंने बहू का बड़बड़ाना सुन लिया था- 'नौकरों के मुँह लगे रहते हैं, इन्हें तो हमारी इज्ज़त का भी ख्याल नहीं ? उस दिन से महेसू से भी बहुत कम बातें करते हैं, जबकि उन्हें महेसू से बात करने में बड़ा अपनापन महसूस होता था।गॉव में सदैव लोगों से घिरे रहते थे, कोई न कोई आकर बैठ ही जाता।रामखिलावन की मॉ की मौत के बाद भी उन्होंने इतना अकेलापन महसूस नहीं किया था, जितना यहाँ महसूस हो रहा था।उसकी मॉ की मौत पर उन्होंने टेलीग्राम किया था, किंतु तेरही को ही पहुँचा था, 'बड़ी बिजी लाइफ हो गई है, क्या करूँ कहीं जाना ही नहीं मिलता।' मॉ की मौत की खबर के साथ ही रोती-कलपती उनकी बेटी 'सावित्री' आयी थी।रामखेलावन सपरिवार आया था और दूसरे ही दिन चला गया था।सावित्री और उसका पति राजेन्द्र कई दिन तक रूके थे और जाते समय कहा था कि वे उनके साथ चलकर रहे, किन्तु उन्होंने मना कर दिया था।दिनों रामखिलावन गॉव आया था तो आशा के विपरीत तीन-चार दिन रहा था, पिछले 'बाबूजी', आप हमारे साथ चलकर रहें यहाँ अब क्या है ? वे जमीन और घर की व्यवस्था के बारे में सोच ही रहे थे तभी सुरेश ने बताया था, बड़े भइया घर और जमीन बेचने की बात कर रहे हैं।एक बार शंका ने सिर उठाया था कि कहीं वे छले तो नहीं जा रहे हैं,

https://xtremepape.rs/

किंतु यह सोचकर खामोश रहें कि मरने के बाद है तो सब इसी का, मुझे क्या दो वक्त की रोटी और कपड़ा चाहिए। उनकी इच्छा सावित्री को भी आधा हिस्सा देने की थी, किंतु कह नहीं सके थे और रामखिलावन से सब बेच दिया था। यहाँ आकर उन्हें पता चला कि रामखिलावन ने उस पैसे से उसने कार खरीद ली थी। कमरे में कबूतर इधर-उधर फुदकता घूम रहा था।कार का हार्न सुनकर उन्होंने खिड़की खोल कर बाहर झांका।कल वाला लड़का कार से बाहर झांक रहा था और सुशीला कार से उतर रही थी।बाबूजी, ये बीबीजी का ब्वायफ्रेंड है, महेसू बोला।सुशीला के कपड़े देखकर उनकी आँखें शर्म से झुक जाती है, बहू को देखकर लगता है कि वह सुशीला की माँ नहीं बड़ी बहन है।कुछ सोचकर वह कमरे से बाहर आ गए।‘सुनो बेटी !’ उन्होंने सुशीला को आवाज दी।‘क्या है ?’ ठिठककर रूकते हुए सुशीला बोली। देखो बेटी, तुम समझदार हो, तुम्हें अपने माँ-बाप की इज्ज़त का ख्याल रखना चाहिए, वह समझाते हुए बोले।सुशीला ने एक बार उन्हें देखा और सिर झटककर तेजी से कमरे में चली गई।कबूतर कोने में दुबका बैठा था, वह भी अपने बिस्तर में दुबक गये।रात में सुशीला का स्वर उनके अस्तित्व के टुकड़े टुकड़े कर रहा था।‘मम्मी, इस बुद्ढे को क्या राइट है मेरी प्राइवेट लाइफ में डिस्टर्ब करने का, मैं समझदार हूँ, बच्ची नहीं।‘मैं समझा दूँगी कि यहाँ की रोटी हजम नहीं हो रही हो तो अपनी गंवार बेटी के पास जाकर रहे ? बहू कह रही थी।कमरे में फड़फड़ाहट हुई।उन्होंने देखा कबूतर को बिल्ली पकड़ ले गई थी।बाहर बहू अब भी तेज स्वर में बड़बड़ा रही थी।

साबिर हुसैन, नवनीत (नवंबर १९९१)

https://xtremepape.rs/

२.

बेहतर दुनिया का सपना देखते लोग

बहुत बड़ी गिनती में हैं ऐसे लोग इस दुनिया में
जो चढ़ते सूरज को करते हैं नमस्कार
जुटाते हैं सुख-सुविधाएँ और पाते हैं पुरस्कार।
बहुत बड़ी गिनती में हैं ऐसे लोग
जो देख कर हवा का रूख चलते हैं।
जिधर बहे पानी, उधर ही बहते हैं।
बहुत अधिक गिनती में हैं ऐसे लोग
जो कष्टों-संघर्षों से कतराते हैं
करके समझौते बहुत कुछ पाते हैं।
कम नहीं हैं ऐसे लोगों की गिनती
जो पाने को प्रवेश दरबारों में
अपने रीढ़ तक गिरवी रख देते हैं।
रीढ़हीन लोगों की इस बहुत बड़ी दुनिया में
बहुत कम गिनती में हैं ऐसे लोग जो
धारा के विरूद्ध चलते हैं
कष्टों-संघर्षों से जूझते हैं।
समझौतों को नकारते हैं
अपना सूरज खुद उगाते हैं।
भले ही कम हैं
पर हैं अभी भी ऐसे लोग
जो बेहतर दुनिया का सपना देखते हैं
और बचाए रखते हैं अपनी रीढ़
रीढहीन लोगों की भीड़ में।

सुभाष नीरव, परिकथा (जुलाई-अगस्त २००८)

https://xtremepape.rs/